गर्भस्थ बच्चे का लिंग पता करने का नया तरीका

खबर आई है कि जांच की एक नई विधि विकसित की गई है जिससे गर्भ के सातवें सप्ताह में ही गर्भस्थ शिशु का लिंग पता लगाया जा सकेगा। यह विधि गर्भवती स्त्री के खून की जांच पर आधारित है।

भ्रूण का निर्माण स्त्री के अंडाणु व पुरुष के शुक्राणु के संगम के फलस्वरूप होता है। जहां स्त्री के सारे अंडाणु इस लिहाज़ से एक-से होते हैं कि उन सबमें 23वां गुणसूत्र एक्स ही होता है, वहीं पुरुष के शुक्राणु दो तरह के होते हैं। एक तरह के शुक्राणुओं में 23वां गुणसूत्र X किस्म का होता है जबकि दूसरे तरह के शुक्राणुओं में यह Y किस्म का होता है। जहां X शुक्राणु के मिलने से कन्या भ्रूण बनता है वहीं Y शुक्राणु के मिलने से नर भ्रूण बनता है।

नवीन विधि इस बात पर टिकी है कि भ्रूण के गुणसूत्र मां के रक्त में आ जाते हैं। मां के खून की जांच से यह पता लगाया जा सकता है कि भ्रूण से X-ही-X गुणसूत्र आए हैं या X और Y दोनों तरह के गुणसूत्र आए हैं। इस आधार पर भ्रूण के लिंग का पता लग सकता है।

बताते हैं कि यह तरीका अभी पश्चिमी देशों के कुछ क्लीनिक्स में उपलब्ध है। वहां भी इसे लेकर काफी चिंता व्यक्त की गई है। लोगों का कहना है कि इससे लोगों को अपने होने वाले बच्चे का लिंग चुनने में सहायता मिलती है, जो अनैतिक है।

भारत जैसे देश में तो यह घोर चिंता का विषय होना चाहिए। यहां तो पुत्र प्रेम के चलते लिंग अनुपात वैसे ही लड़कियों के विरुद्ध है। अभी भी लोग मनपसंद लिंग का बच्चा (यानी पुत्र) प्राप्ति के लिए अल्ट्रासाउंड जैसी तकनीकों का सहारा लेते हैं। यदि सात सप्ताह में ही लिंग पता लग गया तो इस प्रवृत्ति को और बढ़ावा मिलेगा। बेहतर होगा सरकार अभी से चेत जाए, इसके पहले कि यह तकनीक गांव-गांव, कस्बे-कस्बे में फैल जाए। ***(स्रोत फीचर्स)***